मध्यप्रदेश शासन

हिन्दी भाषा सम्मान

वर्ष 2017-18

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग

हिन्दी भाषा सम्मान
2017–18

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा हिन्दी भाषा के विकास के विभिन्न क्षेत्रों में अमूल्य योगदान के लिए पाँच सम्मान :– (1) सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान : हिन्दी सॉफ्टवेयर सर्चइंजिन, वेब डिजाइनिंग, डिजिटल भाषा, प्रयोगशाला, प्रोग्रामिंग, सोशल मीडिया, डिजिटल ऑडियो, विजुअल एडिटिंग आदि में उत्कृष्ट योगदान देने वाले को सुचना प्रौद्योगिकी सम्मान। (2) निर्मल वर्मा सम्मान : भारतीय अप्रवासी होकर विदेश में हिन्दी के विकास में अमूल्य योगदान करने वाले साधकों को निर्मल वर्मा सम्मान। (3) फ़ादर क़ामिल बुल्के सम्मान : उन विदेशी मूल के लोगों को जिन्होंने हिन्दी भाषा एवं उसकी बोलियों के विकास में उत्कृष्ट योगदान दिया हो। (4) गुणाकर मुले सम्मान : हिन्दी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन एवं पाठ्य–पुस्तकों के निर्माण के लिए उत्कृष्ट योगदान एवं (5) हिन्दी सेवा सम्मान : उन अहिन्दी भाषी लेखकों को जिन्होंने अपने लेखन तथा सृजन से हिन्दी को समृद्ध किया हो; के अवदान को सम्मानित करने हेतु स्थापित किए गये हैं।

वर्ष 2017–18 में हिन्दी भाषा सम्मान क्रमशः सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान – डॉ. अनुराग सीठा , भोपाल, निर्मल वर्मा सम्मान – डॉ. राम प्रसाद भट्ट, जर्मनी, फादर कामिल बुल्के सम्मान – प्रो. जियांग जिंग कुई, चीन, गुणाकर मुले सम्मान शिव चन्द्र दुबे, भोपाल एवं हिन्दी सेवा सम्मान डॉ. छबिल कुमार मेहेर, सागर को प्रदान किये जा रहे हैं।

प्रत्येक सम्मान के अंतर्गत सम्मान राशि रूपये 1,00,000/– (रूपये एक लाख मात्र), प्रशस्ति पट्टिका, शॉल और श्रीफल से अलंकृत किया जाता है। उक्त विद्वानों को सम्मानित करते हुए, मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग गौरव महसूस कर रहा है।

मध्यप्रदेश शासन

हिन्दी भाषा सम्मान

वर्ष 2017-18

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग

हिन्दी भाषा
सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान
2017–18

डॉ. अनुराग सीठा

डॉ. अनुराग सीठा

डॉ. अनुराग सीठा ने डेस्क टॉप पब्लिशिंग में प्रयुक्त होने वाले हिन्दी फॉन्ट्स का निर्माण 1990–95 के दौरान किया। सामान्य पाठ्य संसाधक से प्रकाशन सॉफ्टवेयर जैसे वेन्चुरा, प्रकाशक, हिन्दी भाषा के कन्वर्टर का विकास। जनसामान्य की सुविधा के वेब तथा क्लाइंट–सर्वर तकनीक, हिन्दी भाषा में ई–प्रशासन से संबंधित सॉफ्टवेयर 'सूचना मित्र' का विकास, आइसेक्ट के साथ प्रयोग किया है।

डॉ. अनुराग सीठा ने देश में पहली बार मानक हिन्दी, 'यूनिकोड' का प्रयोग, लिनक्स ऑपरेटिंग सिस्टम के हिन्दी इंटरफेस का निर्माण, इंडलिनक्स समूह के मुख्य सदस्य रहे एवं भारत में लिनक्स के स्थानीयकरण का कार्य आगे बढ़ाया।

डॉ. अनुराग सीठा के विजन डाक्यूमेंट हिन्दी–अंग्रेजी भाषा युग्म पर आधारित पहले क्रॉस लैग्वेज इन्फर्मेशन, रिट्रीवल सर्च इंजन का निर्माण एवं मानक टेस्ट कलेक्शन का निर्माण अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों के आधार पर किया। मानक टेस्ट कलेक्शन को भी मुक्त स्त्रोत के रूप में अन्य शोध कार्यों के लिए जारी किया। माखनलाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय से प्रायोजित प्रोजेक्ट के अंतर्गत दो लाख से अधिक शब्द संख्या के साथ भारत के प्रथम ओपन सोर्स यूनिकोड आधारित हिन्दी के स्पैल चैकर (वर्तनी जाँच) सॉफ्टवेयर का विकास किया।

डॉ. सीठा ने कम्प्यूटर तथा संबंधित विषयों पर स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों के लिए हिन्दी भाषा में 20 से अधिक पुस्तकें विश्वविद्यालयों में पाठ्य पुस्तकों के रूप में स्वीकृत हैं। पुस्तक जावा प्रोग्रामिंग को स्नातक स्तर के लिए अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कृत।

हिन्दी भाषा
सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान
2017–18

चयन समिति की बैठक

हिंदी भाषा
सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान
2017–18
चयन समिति का प्रतिवेदन

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा हिंदी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान 2017–18 प्रदान करने के संबंध में चयन समिति की बैठक 31 अगस्त, 2018 को भोपाल में सम्पन्न हुई, बैठक में नीचे उल्लेखित सदस्य सम्मिलित हुए :–

1. **डॉ. बी.एल. आच्छा, चेन्नई**
2. **प्रो. डी.पी. मिश्रा, कानपुर**
3. **डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह, इलाहाबाद**

चयन समिति को अवगत हुई कि मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित हिंदी सॉफ्टवेयर सर्चइंजिन, वेब डिजाइनिंग, डिजिटल भाषा प्रयोगशाला, प्रोग्रामिंग, सोशल मीडिया, डिजिटल ऑडियो विजुअल एडिटिंग आदि में उत्कृष्ट योगदान देने वाले को सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान प्रदान किया जाना है। यह सम्मान रचनात्मक अवदान के लिए देय है। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग ने इस सम्मान के लिए देश भर के साहित्यकारों, विशेषज्ञों, आलोचकों, विद्वानों से सीधे तथा समाचार पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित कर आवेदन पत्र/अनुशंसाऐं आमंत्रित की। सम्मान हेतु प्राप्त सभी आवेदन पत्र/अनुशंसाओं को चयन समिति के समक्ष रखा गया।

चयन समिति ने प्राप्त अनुशंसाओं पर गम्भीरता से विचार किया एवं समीक्षा की। प्राप्त अनुशंसाओं का अवलोकन एवं विचार विमर्श करने के पश्चात् प्रौद्योगिकी एवं तकनीक में हिंदी को सक्षम बनाने में हर स्तर पर किये गये श्रमसाध्य प्रयास एवं शोध को हिंदी गौरव का विषय मानते हुए चयन समिति सर्वसम्मति से डॉ. अनुराग सीठा, भोपाल का नाम सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान प्रदान करने की अनुशंसित करती है।

31-8-18	31/8/18	31/8/18
(डॉ. बी.एल. आच्छा)	**(प्रो. डी.पी. मिश्रा)**	**(डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह)**

बी.एल. आच्छा

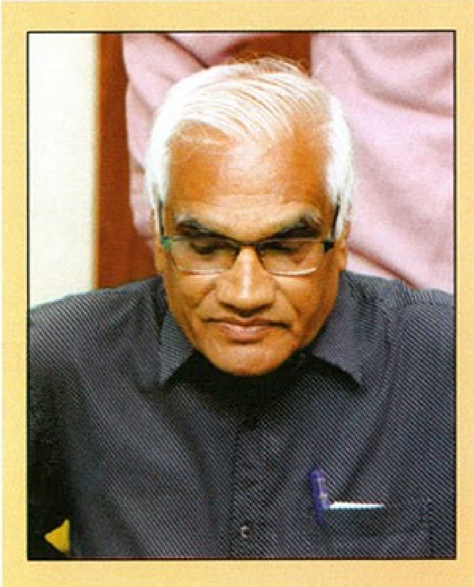

श्री बी.एल. आच्छा का जन्म 05 फरवरी 1950 को देवगढ़ मदारिया जिला राजसमंद (राजस्थान) में हुआ। शिक्षा– एम.ए. हिंदी। मध्यप्रदेश शासन, उच्च शिक्षा विभाग में प्राध्यापक, हिंदी (प्रवर श्रेणी) के पद से 28 फरवरी, 2015 में सेवानिवृत्त। प्रकाशित पुस्तकें – जल टूटता हुआ की पहचान (आलोचना), सर्जनात्मक भाषा और आलोचना, आस्था के बैगन (व्यंग्य), पिताजी का डैडी संकरण (व्यंग्य), आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यास, साहित्य मण्डल, श्रीनाथद्वारा द्वारा भाषाभूषण सम्मान आदि। शोध–निबंध/समीक्षा तथा व्यंग्य रचनाएँ भी विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित।

श्री बी.एल.आच्छा को डॉ. देवराज उपाध्याय पुरस्कार राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर, डॉ. संतोष तिवारी समीक्षा सम्मान म.प्र. एवं डॉ. नंददुलारे वाजपेयी प्रादेशिक पुरस्कार (आलोचना) म.प्र. साहित्य अकादमी भोपाल द्वारा पुरस्कृत किया गया।

डॉ. डी.पी. मिश्रा

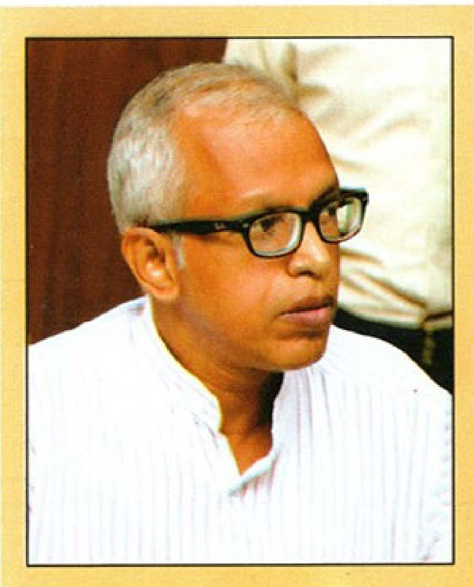

डॉ. डी.पी. मिश्रा आईआईटी कानपुर के एयरोस्पेस इंजीनियरिंग विभाग में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत् हैं। सन् 2002 में जापान की टोक्यो डेन्की विश्वविद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्य किया है। वे कई पुरस्कारों के प्राप्तकर्ता हैं :– युवा वैज्ञानिक सम्मान, सर राजेन्द्रनाथ मुखर्जी मेमोरियल सम्मान, सामन्ता चन्द्रशेखर एवं विकास प्रेरक सम्मान से सम्मानित हैं। डॉ. मिश्रा के पास छह भारतीय पेटेंट हैं, 216 शोध पत्र विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित आलेख, पाँच पाठ्य पुस्तकों की रचना :– फन्डामेन्टल ऑफ कम्बस्टशन, इंजीनियरिंग थर्मो डायनामिक्स, गैस टर्बाइन प्रोपल्शन, एक्सप्रीमेन्टल कम्बस्टशन एवं फन्डामेन्टल ऑफ रॉकेट प्रोपल्शन। उनकी दो कृतियाँ प्रकाशित हैं :– ग्लिम्सिस ऑफ एन्सिएंट इंडियन साइंस एण्ड टेक्नालॉजी एवं फोरेज इन टू एन्सिएंट इंडियन साइंस एण्ड टेक्नालॉजी।

प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह

डॉ.योगेन्द्र प्रताप सिंह प्रोफेसर, हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय। शिक्षा– बी.एस. सी., एम.ए. (हिन्दी), डी. फिल.। वृहद शोध परियोजना, प्रकाशन, सम्पादन, प्रधान संपादक, शोध संचयन मानविकी एवं समाज विज्ञान के अंतर्विषयी शोध पर आधारित अर्द्धवार्षिक अंतर्राष्ट्रीय शोध जर्नल, हिंदी एवं अंग्रेजी में।

दर्जनों शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित आलेख, पचास से अधिक अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय संगोष्ठियों/अधिवेशनों/व्याख्यानमालाओं में प्रपत्र वाचन एवं सहभाग। अकादमिक/संस्थानिक सक्रियता/योगदान, राजभाषा से संबंधित कार्य का अनुभव। विगत पन्द्रह वर्षों से राजभाषा के विभिन्न कार्यक्रमों/कार्यशालाओं में राजभाषा विशेषज्ञ के रूप में सतत् भूमिका रही है। सूचना प्रौद्योगिकी के युग में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की समस्या एवं संभावनाओं पर अनेक लेख प्रकाशित एवं संभाषण हो चुके हैं।

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन, मॉरीशस में प्रौद्योगिकी एवं हिंदी तथा जनमाध्यम एवं भारतीय संस्कृति विषय पर पाँच अनुशंसाएँ स्वीकार की गईं। विकास के अवसर से वंचित बस्तियों के नौनिहालों की निःशुल्क शिक्षा हेतु संध्याकालीन मुक्त प्राथमिक पाठशालाओं का संचालन 1995 से 2013 तक किया।

हिन्दी भाषा
निर्मल वर्मा सम्मान
2017–18

डॉ. राम प्रसाद भट्ट

डॉ. राम प्रसाद भट्ट

डॉ. राम प्रसाद भट्ट का जन्म टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड) में हुआ। शिक्षा– एम.ए. बी.एड., पीएच.डी.। 1996 से अब तक विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्यापन। हिन्दी भाषा एवं साहित्य, लोक साहित्य, भारतीय समाज एवं संस्कृति के विशेषज्ञ। भारतीय एवं तिब्बती संस्कृति एवं इतिहास विभाग हैम्बर्ग विश्वविद्यालय में कार्यरत्।

टिहरी बाँध के डूब क्षेत्र के लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, बोलचाल हिन्दी, प्रारंभिक एवं माध्यमिक हिंदी, हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में इलेक्ट्रानिक एवं प्रिंट मीडिया की भूमिका, गढ़वाली, लोक–गीतों में प्रतीक, अधुनातन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री, दलित, आदिवासी एवं अल्पसंख्यक विमर्श, हिन्दी कहानियों, कविताओं एवं एकांकियों का जर्मन अनुवाद,, डिक्शनरी ऑफ हिन्दुस्तानी, हिस्टॉरिकल हिंदी ग्रामर ग्रेट ट्रेडिशन और लिटल एवं ट्रेडिशनः कल्चरल ट्रेडिशन ऑफ सेंट्रल हिमालय पर शोध। लगभग पैंतीस, अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में हिन्दी भाषा एवं साहित्य, लोक साहित्य एवं परम्परा, संस्कृति एवं समाज पर अनेक देशों एवं विश्वविद्यालयों में व्याख्यान।

आपके मार्गदर्शन में अब तक लगभग 721 यूरोपियन नागरिक हिन्दी सीख चुके हैं। बड़े स्तर पर विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन, 2011 से हर दूसरे वर्ष इंडिया वीक हैम्बर्ग सरकार के सौजन्य से।

हैम्बर्ग विश्वविद्यालय द्वारा तीन पुस्तकों के लिए अनुदान, दर्पण, इंडिया वर्ल्ड फाउण्डेशन, साहित्यिक सांस्कृतिक शोध संस्था, मुंबई एवं रूसी भारतीय मैत्री संघ, मास्को द्वारा हिन्दी भास्कर सम्मान, हिन्दी कल्याण न्यास द्वारा हिन्दी गौरव सम्मान से सम्मानित।

हिन्दी भाषा
निर्मल वर्मा सम्मान
2017–18

चयन समिति की बैठक

हिंदी भाषा
निर्मल वर्मा सम्मान
2017–18
चयन समिति का प्रतिवेदन

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा हिंदी भाषा–निर्मल वर्मा सम्मान 2017–18 प्रदान करने के संबंध में चयन समिति की बैठक 30 अगस्त, 2018 को भोपाल में सम्पन्न हुई, जिसमें निम्नानुसार सदस्य सम्मिलित हुए :–

1. **डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल, बांदा**
2. **डॉ. सुरेश कुमार वर्मा, जबलपुर**
3. **प्रो. सुरेन्द्र विक्रम, लखनऊ**

चयन समिति को अवगत कराया गया कि मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा ''भारतीय अप्रवासी होकर विदेश में हिंदी के विकास में अमूल्य योगदान करने वाले साधकों को निर्मल वर्मा सम्मान प्रदान किया जायेगा।'' समिति के सदस्य चयन के मापदण्डों, नियमों एवं चयन के लिए अनुशंसाएँ प्राप्त करने की प्रक्रिया से अवगत हुए। यह सम्मान किसी एक अथवा विशिष्ट कृति के लिए न होकर समग्र रचनात्मक अवदान के लिए देय है। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग ने इस सम्मान के लिए देश–विदेश के साहित्यकारों, विशेषज्ञो, आलोचकों से सीधे तथा समाचार पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित कर आवेदन पत्र/अनुशंसाएँ आमंत्रित की हैं। सम्मान हेतु प्राप्त सभी आवेदन पत्र/अनुशंसाओं को चयन समिति के समक्ष रखा गया। चयन समिति ने प्राप्त अनंशुसाओं की समीक्षा करने के साथ ही अपने द्वारा सुझाए गए नामों पर भी विचार किया। चयन समिति का यह मंतव्य है कि प्रख्यात डॉ. राम प्रसाद भट्‌ट ने विगत वर्षों में निरंतर सृजन सक्रियता के माध्यम से विदेश में हिंदी के विकास में गहरी प्रतिष्ठा एवं प्रशंसा अर्जित की है, इसीलिए डॉ. राम प्रसाद भट्‌ट के नाम पर गहन चर्चा हुई।

समस्त अनुशंसाओं का अवलोकन एवं विचार विमर्श करने के पश्चात् समिति के सदस्यों द्वारा सर्वसम्मति से प्रसिद्ध अध्येता डॉ. राम प्रसाद भट्‌ट, हेम्बर्ग, जर्मनी को 'निर्मल वर्मा सम्मान' प्रदान करने की अनुशंसा करती है।

30.8.18

(डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल) **(डॉ. सुरेश कुमार वर्मा)** **(प्रो. सुरेन्द्र विक्रम)**

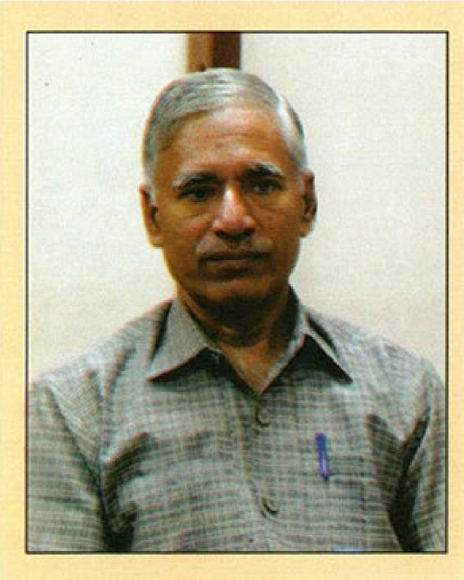

डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल

डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल का जन्म 17 अक्टूबर, 1963 फतेहपुर (उ.प्र.)। शिक्षा एम.ए. (हिंदी एवं अंग्रेजी), पीएच.डी. (हिंदी)। प्रशासनिक एवं अध्यापन का दीर्घकालीन अनुभव।

प्रकाशनः पुस्तक–अध्याय :– समीक्षा की धार, सामान्य हिंदी/निबंधालोक, सामाजिक परिवर्तन और चारों सप्तक, गाँधी, सेवाग्राम और गांधीदर्शन, जनसंचार का भाषिक आयाम, वैश्वीकरण के तनाव के आलोक में हिंदी कविता, प्रोफेसर दिलीप सिंह से एक भेंट, वैश्वीकरण की अवधारणा, प्रक्रिया और मूल्याबोध, अज्ञेय : एक आग जो शीतल करें, किन्तु कभी मंद न हो, भवानी प्रसाद मिश्र की कविता रचनज्ञ–दृष्टि संवेदना और शिल्प, सामाजिक परिवर्तन की दिशाएँ और अज्ञेय के सभी सप्तकों का साहित्य, भारतीय उपन्यास की अवधारणा और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यास, बुंदेलखंड की काव्य–परंपरा और भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में वर्णित वृहद बुंदेलखंड का लोक–प्रकृत्यालोक, बूढ़ी काकी, बेटों वाली विधवा, समर यात्रा एवं काव्य–मंजूषा आदि अनेकों शोध पत्र, निंबंध एवं लेख प्रकाशित है।

सम्मेलन/सभाएँ/संगोष्ठियाँ/कार्यशालाओं का आयोजन एवं सहभागिता। डॉ. शुक्ल को डॉ. महाराज कृष्ण जैन स्मृति सम्मान, श्री केशरदेव गिनिया देवी बजाज स्मृति सम्मान, शांति निकेतन साहित्य अलंकरण आदि सम्मान से सम्मानित हैं।

डॉ. सुरेश कुमार वर्मा

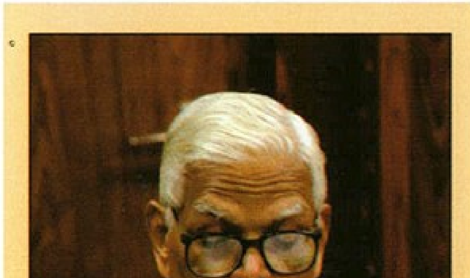

डॉ. सुरेश कुमार वर्मा का जन्म सन् 1938 में बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में हुआ। शिक्षा– एम.ए. (हिन्दी), एल–एल.बी., पीएच.डी. और डी.लिट्.। मध्यप्रदेश के शासकीय महाविद्यालयों में प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर महाविद्यालय प्राचार्य के रूप में सेवाएँ दीं और अतिरिक्त संचालक, उच्च शिक्षा के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। आपके प्रणीत उपन्यास– 'मुमताज़ महल',' रेस्मान', 'सबका मालिक एक' और

'महाराजा छत्रसाल' दो नाटक यथा– 'निम्नमार्गी' और 'दिशाहीन'। दो कहानी संकलन– 'जंग के बारजे पर' तथा 'मंदिर एवं अन्य कहानियाँ'।

' डॉ. रामकुमार वर्मा की नाट्यकला' नामक आलोचनात्मक ग्रंथ निबन्ध संकलन– 'करमन की गति न्यारी' ।भाषाविज्ञान पर किताब– 'हिन्दी अर्थान्तर'। साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् द्वारा उपन्यास 'रेस्मान' के लिए सन् 2013 के बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' पुरस्कार से सम्मानित।

डॉ. सुरेन्द्र विक्रम

डॉ. सुरेन्द्र विक्रम बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, प्रसिद्ध शिक्षाविद् और हिंदी साहित्य के सशक्त प्रतिष्ठित रचनाकर हैं। विगत 32 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न पदों को सुशोभित करते हुए, हिंदी की सेवा में संलग्न हैं। लखनऊ विश्वविद्यालय से सम्बद्ध लखनऊ क्रिश्चियन कॉलेज में एसोसिएट एवं हिंदी विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं। आप हिंदी बाल साहित्य में स्वतंत्र रूप से अनुसंधान हिन्दी साहित्य संस्थानों के अनेक कार्यक्रम में विषय विशेष में हिस्सेदारी। दो दर्जन से अधिक पुस्तकों के लेखक तथा युगसाक्षी और 'अवध पुष्पांजलि' साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादक, आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा ज्ञानवाणी चैनल से सक्रिय। कविताएँ एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्य पुस्तक 'रिमझिम' भाग–3, 'बाल–बगीचा' है।

'नवलय' ध्याकरण–पुष्प (कक्षा 1 से 10 तक) पाठ्य पुस्तक के श्रृंखला के संपादक हैं।

देश–विदेश के विभिन्न भागों में हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए आयोजित 500 से अधिक हिंदी कार्यशालाओं में विशेषज्ञ के रूप में भाग लेकर कार्यशालाओं को नूतन आयाम दिया। उत्कृष्ट साहित्य सृजन के लिए उ.प्र. हिंदी संस्थान, लखनऊ से तथा देश की अन्य बीस संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत तथा सम्मानित।

हिन्दी भाषा
फ़ादर क़ामिल बुल्के सम्मान
2017–18

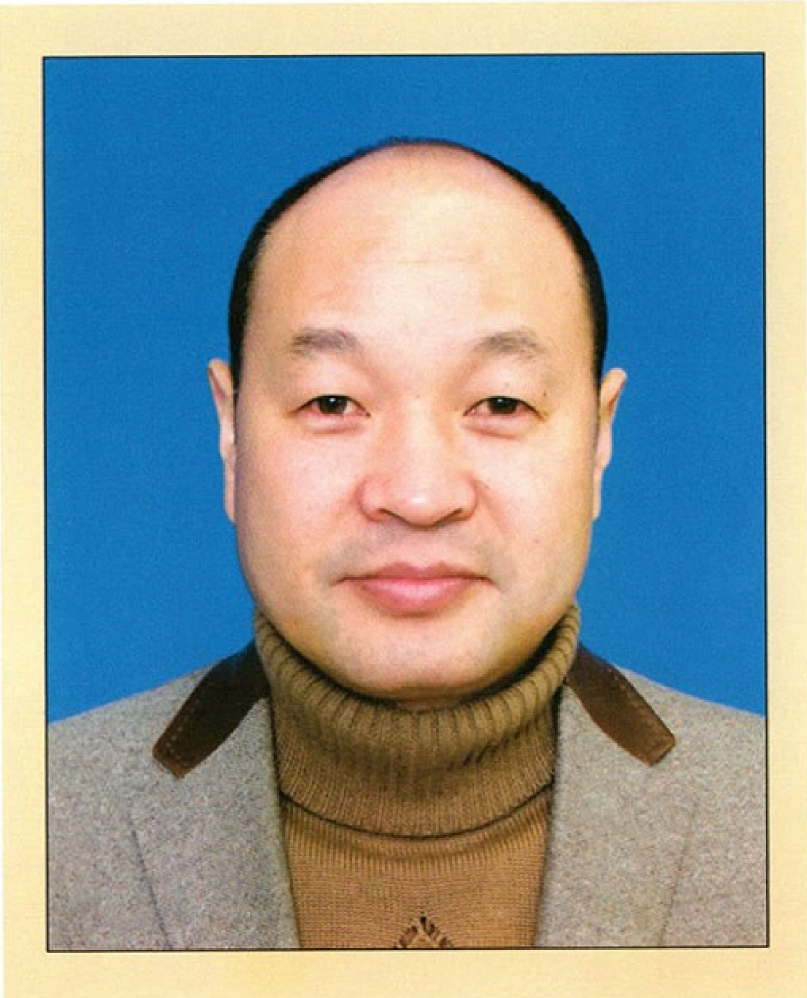

प्रोफेसर जियांग जिंगकुई

प्रोफेसर जियांग जिंगकुई

डॉ. जियांग जिंगकुई पेकिंग विश्वविद्यालय में प्रोफेसर पद पर कार्यरत् हैं। वे डायरेक्टर, सेन्टर फॉर साउथ एशियन स्टॅडीज, पेकिंग यूनिवर्सिटी एण्ड फेलो आनंद कुमारस्वामी, साहित्य अकादमी (इंडियाज नेशनल एकेडमी ऑफ लेटर्स) भी हैं।

उनका शिक्षण और अनुसंधान आधुनिक और समकालीन भारतीय भाषाओं के साथ–साथ भारतीय धर्म और दक्षिण एशियाई संस्कृति पर केन्द्रित है। उनके प्रमुख प्रकाशनों में छह मोनोग्राफ शामिल हैं: जिनमें हिन्दी साहित्य का इतिहास, भारतीय साहित्य पर, हिन्दी नाटकीय साहित्य, टैगोर के साहित्यिक कार्यों, आधुनिक और समकालीन भारतीय साहित्यिक कार्यों, मध्ययुगीन भारतीय धार्मिक साहित्य पर सह लेखन, सूरदास द्वारा लिखित सूर सागर का ब्रजभाषा से चीनी में अनुवाद। भारत और चीनः– सांस्कृतिक संबंधों के एक हजार साल और पीसी बागची द्वारा लिखित पुस्तक भारत और चीन का अंग्रेजी से चीनी में अनुवाद।

प्रोफेसर जियांग ने बीस से अधिक सम्पादित और संकलित भाग, जिसमें ग्राण्ड चीनी हिन्दी शब्दकोश, चीन–भारत सांस्कृतिक सम्पर्कों का विश्वकोश। सत्तर से अधिक प्रकाशन जिनमें भारतीय धर्मनिरपेक्षता, इतिहास, वर्तमान और संभावना आदि। भारतीय क्लासिक्स का चीनी अनुवाद।

प्रोफेसर जियांग दर्जनों पुरस्कार से सम्मानित हैं। अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी पुरस्कार, मानव विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में उत्कृष्ट अनुसंधान, सामाजिक विज्ञान और मानवीकी में उत्कृष्ट अनुसंधान से जॉर्ज ग्रिर्सन सम्मान से सम्मानित किया गया है। पेकिंग विश्वविद्यालय में उनके कार्य के अतिरिक्ति दक्षिण एशियाई भाषाओं के लिए चीन एसोसिएशन के चेयरमेन, चीनी एसोसिएशन के उपाध्यक्ष पद पर भी कार्य किया है, जहाँ वर्तमान में विदेशी भाषाओं का अध्ययन बहुत ही अल्प मात्रा में है।

हिन्दी भाषा
फ़ादर क़ामिल बुल्के सम्मान
2017–18

चयन समिति की बैठक

हिंदी भाषा
फ़ादर क़ामिल बुल्के सम्मान
2017–18
चयन समिति का प्रतिवेदन

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा हिंदी भाषा–फ़ादर क़ामिल बुल्के सम्मान 2017–18 प्रदान करने के संबंध में चयन समिति की बैठक 31 अगस्त, 2018 को भोपाल में सम्पन्न हुई, जिसमें नीचे उल्लेखित सदस्य सम्मिलित हुए :–

1. **श्री माधवदास सक्सेना, मुम्बई**
2. **प्रो. गिरीश्वर मिश्र, वर्धा**
3. **श्री कमलकिशोर गोयनका, नई दिल्ली**
4. **श्री विजय बहादुर सिंह, भोपाल**

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित फ़ादर क़ामिल बुल्के सम्मान :– ''उन विदेशी मूल के लोगों को जिन्होंने हिंदी भाषा एवं उसकी बोलियों के विकास में उत्कृष्ट योगदान दिया हो, को फ़ादर क़ामिल बुल्के सम्मान प्रदान किया जायेगा।'' चयन समिति को अवगत कराया गया कि यह सम्मान सृजनात्मक, उत्कृष्टता, दीर्घ साधना, लेखक की वर्तमान में सृजन–सक्रियता और समग्र उपलब्धियों के आधार पर दिया जाना है। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग, ने इस सम्मान के लिए राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय साहित्कारों, विशेषज्ञो, आलोचकों से सीधे तथा समाचार पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित कर आवेदन पत्र/अनुशंसाएं आमंत्रित की हैं। सम्मान हेतु प्राप्त सभी आवेदन पत्र/अनुशंसाओं को चयन समिति के समक्ष रखा गया। चयन समिति ने प्राप्त आवेदन पत्र की समीक्षा की।

चयन समिति प्राप्त आवेदन पत्रों में से कोई उपयुक्त नाम न होने की स्थिति में स्वविवेक से विचार कर प्रख्यात प्रो. जियांग जिंगकुई, चीन को हिंदी भाषा के विकास में निरंतर सृजन सक्रियता, उल्लेखनीय योगदान के माध्यम से गहरी प्रतिष्ठा और प्रशंसा अर्जित की है।

चयन समिति प्राप्त अनुशंसाओं का अवलोकन एवं विचार विमर्श करने के पश्चात् सर्वसम्मति से प्रो. जियांग जिंगकुई, चीन का नाम हिंदी भाषा–फ़ादर क़ामिल बुल्के सम्मान प्रदान करने हेतु अनुशंसित करती है।

(माधवदास सक्सेना) **(प्रो. गिरीश्वर मिश्र)** **(कमलकिशोर गोयनका)** **(विजय बहादुर सिंह)**

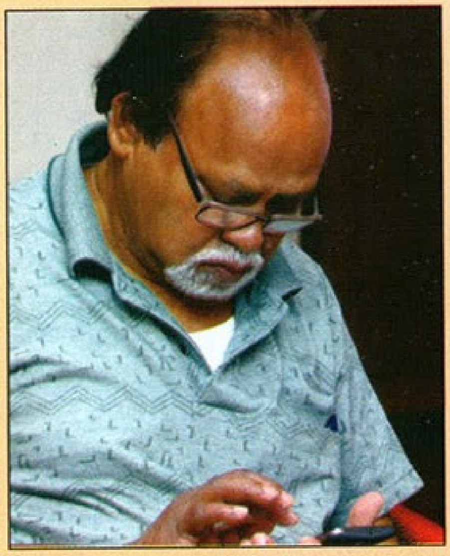

डॉ. माधव सक्सेना

डॉ. माधव सक्सेना ''अरविंद'' का जन्म 17 मार्च 1946 फतेहगढ़ (उ.प्र.)। शिक्षा विशारद, एम.एस.सी., पीएच.डी. (भौतिकशास्त्र), मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई। वर्ष 1965 में भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई में वरिष्ठ वैज्ञानिक के पद पर कार्यरत रहते हुये, वर्ष 2006 में सेवानिवृत्त। डॉ. सक्सेना की पहली कहानी प्रतीक्षाग्रस्त 1967 में प्रकाशित, इसके पश्चात् आपकी 30 कहानियाँ, एक कहानी संग्रह 'हिंदुस्तान/पाकिस्तान' तथा अन्य कहानी संग्रह प्रकाशनाधीन है। आपकी चर्चित कहानियाँ: हिंदुस्तान/पाकिस्तान, प्रतीक्षाग्रस्त, अपाहिज, सुरंग, और नत्थू मर गया, मेरे हिस्से का आसमान, मीन माने मछली, दहशतज़दा, आदमी मरता क्यों नही आदि। आपने अंग्रेजी, मराठी और गुजराती से हिंदी में अनुवाद भी किया है। अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित और महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी द्वारा वर्ष 2016–17 के लिए छत्रपति शिवाजी राष्ट्रीय एकता ''जीवन गौरव'' पुरस्कार से सम्मानित।

प्रो. गिरीश्वर मिश्र

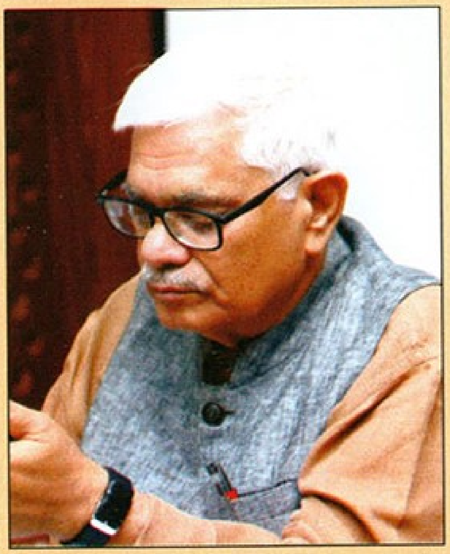

जन्म 21 अप्रैल 1951 गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)। शिक्षा– मनोविज्ञान में एम.ए.,पीएच.डी.। मनोविद, विचारक और संस्कृति के अध्येता। महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के वर्ष 2014 से कुलपति। संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, इंडोनेशिया, चीन, स्वीडन, दक्षिण अफ्रीका, रूस मॉरीशस की अकादमिक यात्राएँ। भारतीय सामाजिक अनुसंधान परिषद के राष्ट्रीय फेलो, मनोविज्ञान विषय में बीस पुस्तकों और लगभग 200 शोध पत्रों का प्रकाशन। दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, राष्ट्रीय सहारा, सन्मार्ग, लोकमत, वागर्थ, नया ज्ञानोदय, कादंबिनी तथा आधुनिक भारतीय साहित्य, भारतीय साधु, संत और सन्यासी : जीने की एक राह, यह भी शीर्षक से रविकपूर की अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद। होने और न होने का सच, हिन्दी समाज और हिन्दी भाषा और प्रकाश की आकांक्षा शीर्षक निबंध संग्रह प्रकाशित। नवें तथा दसवें विश्व हिन्दी सम्मेलनों के प्रतिवेदनों का संपादन। 11वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के परामर्शदाता मंडल के सदस्य। बहुवचन तथा पुस्तक वार्ता के प्रधान संपादक।

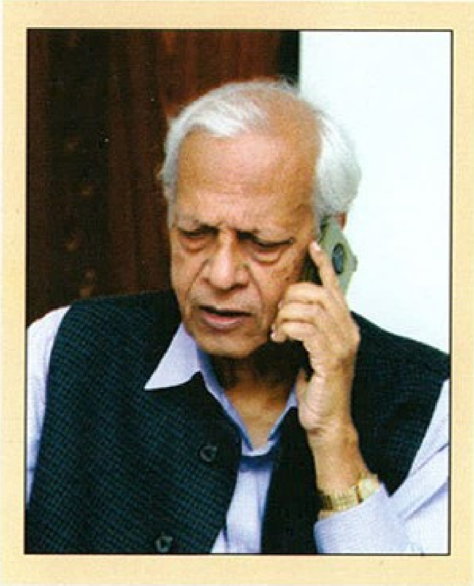

डॉ. कमल किशोर गोयनका

डॉ. कमल किशोर गोयनका का जन्म 11 अक्टूबर, 1938, बुलंदशहर, उत्तरप्रदेश में हुआ। शिक्षा– एम.ए., पीएच.डी. दिल्ली विश्वविद्यालय से, एम.लिट् राँची विश्वविद्यालय से तथा 40 वर्ष तक दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी का अध्ययन–अध्यापन। देश–विदेश में प्रेमचंद के जीवन विचार और साहित्य के विख्यात विशेषज्ञ। हिन्दी में प्रवासी साहित्य के सर्वप्रथम आलोचक और प्रोत्साहनकर्ता। प्रेमचंद पर 30 पुस्तकें, प्रवासी साहित्य पर 12 पुस्तकें तथा अन्य साहित्यकारों पर 15 पुस्तकें प्रकाशित। सूरीनाम, इंग्लैण्ड, फ्रांस, मारीशस, अमेरिका आदि देशों की साहित्यिक यात्रा। विश्व हिन्दी सम्मेलनों की सरकारी परामर्श समितियों के सदस्य, वर्तमान में उपाध्यक्ष केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

डॉ. विजय बहादुर सिंह

प्रसिद्ध आलोचक और कवि डॉ. विजय बहादुर सिंह (1940) ने अध्यापन कार्य के साथ–साथ महत्वपूर्ण आलोचनात्मक कृतियों की सृष्टि, स्वतंत्र आलोचनात्मक ग्रंथ, वृहत्रयी (प्रसाद, निराला, पंत की कविता पर एकाग्रचिंतन) नागार्जुन का रचना संसार, जनकवि, नागार्जुन संवाद, कविता और संवेदना, उपन्यास : समय और संवेदना, आलोचक का स्वदेश आदि उनके बहुचर्चित आलोचनात्मक ग्रंथ हैं। आलोचना की दुरूह बौद्धिकता से संबद्ध रहते हुए भी कविता के भावमय जगत में प्रवेश करने में विजय बहादुर सिंह को कोई कठिनाई नहीं हुई। मौसम की चिट्ठी, पतझड़ की बाँसुरी, पृथ्वी का प्रेमगीत, भीम बैठका, शब्द जिन्हें भूल गई भाषा काव्य संग्रह हैं। श्रीलंका के कोलम्बो में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महाबौद्ध सम्मेलन (2001) द्वारा उनके लेखक और चिंतन की संस्तुष्टि की गई।

मध्यप्रदेश जनवादी लेखक संघ के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. विजय बहादुर सिंह लोक सम्मान, साहित्य साधना सम्मान, श्रेष्ठ कला सम्मान तथा डॉ. रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान से विभूषित हैं। डॉ. विजय बहादुर सिंह हिन्दी आलोचना और सृजनशील साहित्य के उस बिन्दु पर खड़े हैं, जिसका केन्द्र भारत की वह जन बिरादरी और विरासत है, जिसके एक छोर पर गौतम बुद्ध और गांधी हैं, तो दूसरे छोर पर मार्क्स और लोहिया।

हिन्दी भाषा
गुणाकर मुले सम्मान
2017–18

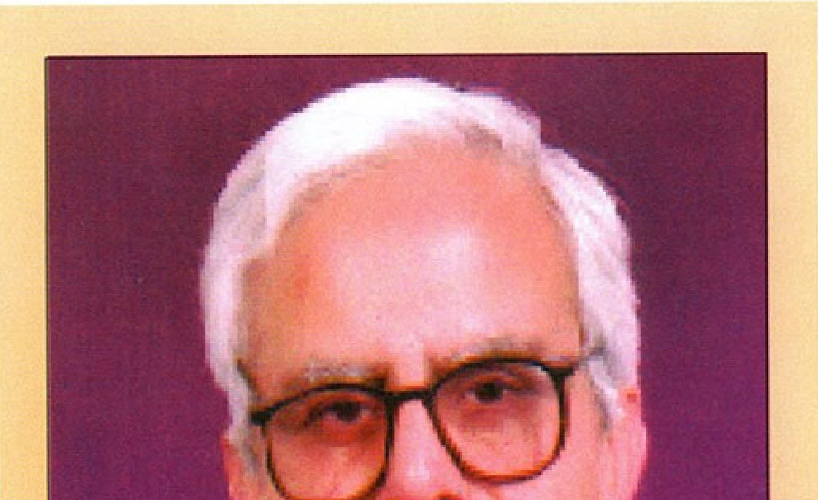

डॉ. शिव चन्द्र दुबे

डॉ. शिव चन्द्र दुबे

डॉ. शिव चन्द्र दुबे ग्राम पो. सकरिया, जि. सतना, म. प्र. के पुश्तैनी निवासी, वर्तमान में भोपाल में निवासरत। पशु चिकित्सा महाविद्यालय, जबलपुर से स्नातक, स्नातकोत्तर एवं कृषि वि.वि., लुधियाना से पीएच.डी.। पाँच विभिन्न संस्थानों से प्रशंसा पत्र प्राप्त तथा विज्ञान भारती एवं बायोसेफ्टी समिति सहित नौ वैज्ञानिक अकादमियों एवं समितियों की आजीवन सदस्य। अंतर्राष्ट्रीय बर्डफ्लू विशेषज्ञ डॉ. दुबे को राष्ट्रीय पशु चिकित्सा अकादमी से फैलोशिप।

तकनीकी हिंदी के उन्नयन एवं परिमार्जन हेतु प्रयास। माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा निश्चित मार्गदर्शक बिंदुओं के आधार पर भाषानुसंधान एवं भाषानुशासन द्वारा तकनीकी हिंदी शब्दावली की एकरुपता, नए तकनीकी शब्दों का गढ़ना, रोगों के नाम का सरल हिंदीकरण, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने मान्यता पश्चात पशु चिकित्सा विज्ञान के शब्दकोश में शामिल। भेड़–बकरियों के रोग पर हिंदी तथा अंग्रेजी में पुस्तकों का प्रकाशन। शिक्षा एवं प्रसार कार्यक्रमों के तहत तकनीकी हिंदी में प्रसार सामग्रियों का निर्माण, संपादन, पत्र–पत्रिकाओं में लेखन व प्रकाशन, दो हिंदी की कृतियाँ, तीन सहलेखन कृतियों के अध्याय, लघु पुस्तकें, मेनुअल, 105 शोध पत्र, नौ चिकित्सा विज्ञान तकनीकी शब्दावली संबंधी शोध पत्र प्रकाशित। डॉ. दुबे अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत।

डॉ. मेघनाथ शाह पुरस्कार, राजेन्द्र प्रसाद पुरस्कार तथा राजीव गांधी राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित।

हिन्दी भाषा
गुणाकर मुले सम्मान
2017–18

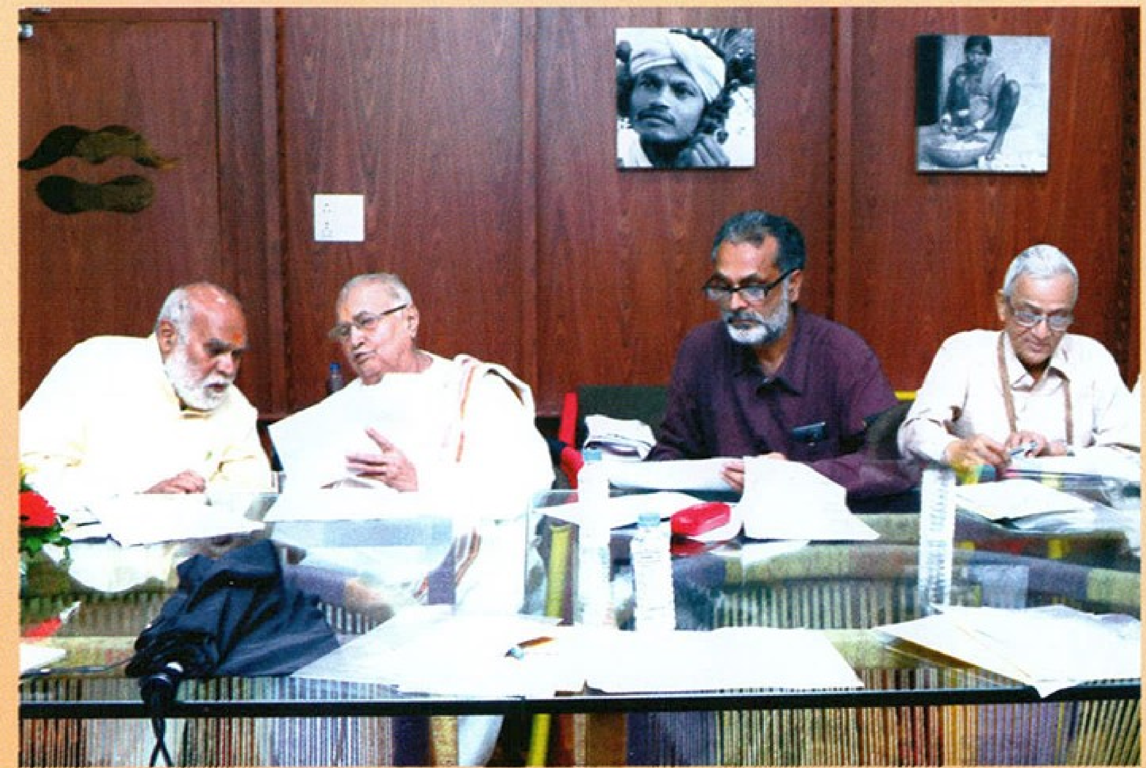

चयन समिति की बैठक

हिंदी भाषा
गुणाकर मुले सम्मान
2017–18
चयन समिति का प्रतिवेदन

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा हिंदी भाषा गुणाकर मुले सम्मान 2017–18 प्रदान करने के संबंध में चयन समिति की बैठक 31 अगस्त 2018 को सम्पन्न हुई, जिसमें निम्नानुसार सदस्य सम्मिलित हुए :–

1. **डॉ. अम्बिकादत्त शर्मा, सागर**
2. **डॉ. पुरूषोत्तम भट्ट चक्रवर्ती, भोपाल**
3. **डॉ. हरिमोहन बुधौलिया, उज्जैन**
4. **डॉ. कृष्णकांत चतुर्वेदी, जबलपुर**

चयन समिति को अवगत कराया गया है कि मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन एवं पाठ्य–पुस्तकों के निर्माण के लिए उत्कृष्ट योगदान देने वाले को गुणाकर मुले सम्मान प्रदान किया जायेगा। यह सम्मान रचनात्मक अवदान के लिए देय है। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग ने इस सम्मान के लिए देश भर के साहित्यकारों विशेषज्ञों, आलोचकों से सीधे तथा समाचार पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित कर आवेदन पत्र/अनुशंसाएँ आमंत्रित की थीं। सम्मान हेतु प्राप्त सभी आवेदन पत्र/अनुशंसाओं को चयन समिति के समक्ष रखा गया।

चयन समिति ने प्राप्त अनुशंसाओं/आवेदन पत्र की समीक्षा की। चयन समिति ने पिछले अनेक वर्षों में निरंतर सृजन सक्रियता, हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान, गहरी प्रतिष्ठा और प्रशंसा प्राप्त प्रख्यात डॉ. शिव चन्द्र दुबे, भोपाल को सर्वसम्मति से हिंदी भाषा–गुणाकर मुले सम्मान प्रदान करने की अनुशंसा करती है।

31/8/18
(डॉ. अम्बिकादत्त शर्मा)

31.8.18
(डॉ. पुरूषोत्तम भट्ट चक्रवर्ती)

31-8-18
(डॉ. हरिमोहन बुधौलिया)

31.8.18
(डॉ. कृष्णकांत चतुर्वेदी)

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा

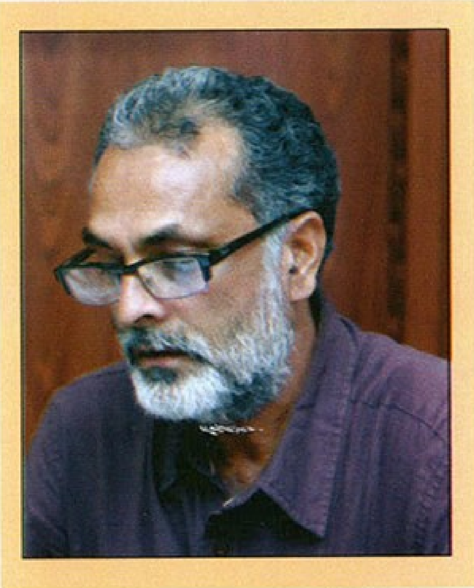

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा का काशी की पाण्डित्य परम्परा और आचार्य कुल में दीक्षित दर्शनशास्त्री हैं। दर्शनशास्त्र में एम.ए., पीएच.डी. की तथा बौद्ध दर्शनाचार्य की उपाधि। भारतीय तत्त्वविद्या, प्रमाण शास्त्र, भाषादर्शन और साभ्यतिक अध्ययन के परिपृच्छाधर्मी अध्येता हैं। लिखित एवं सम्पादित ग्रन्थों में स्वातन्त्र्योत्तर दार्शनिक प्रकरण सीरीज़ के अन्तर्गत– समेकित दार्शनिक विमर्श, समेकित अद्वैत विमर्श, भारतीय दर्शन के 50 वर्ष तथा समेकित पाश्चात्य दर्शन समीक्षा और भारतीय दर्शन में प्राप्यकारित्ववाद, इन डिफेन्स ऑफ मेटाफिजिक्स, वेदान्त दर्शन के आयाम, बौद्ध प्रमाण दर्शन उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। मीमांसा पदार्थ विज्ञानम्, तत्त्वोपप्लवसिंह का हिन्दी अनुवाद एवं महामहोपाध्याय फणिभूषण तर्कवागीश की विश्व प्रसिद्ध बड्.गला कृति न्याय दर्शनम् के हिन्दी रूपान्तरण का सम्पादन। नरेश मेहता स्मृति वाड्.मय सम्मान से सम्मानित। प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) में दर्शनशास्त्र के आचार्य है।

डॉ. पुरूषोत्तम भट्ट चक्रवर्ती

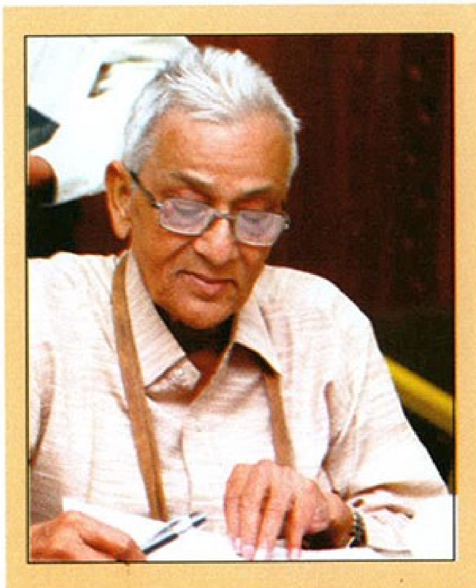

डॉ. पुरूषोत्तम भट्ट चक्रवर्ती का जन्म 21 सितम्बर, 1936 को हुआ। एम.एस.सी., पीएच.डी., साहित्य विशारद, धर्म विशारद की शिक्षा एवं उपाधियाँ प्राप्त। लगभग सौ शोध पत्र, चार समीक्षा तथा बारह पीएच.डी. का निर्देशन। विगत 55 वर्षों से सतत् हिंदी में विज्ञान–लेखन से सम्बद्ध। 1961 में पहली पुस्तक प्रायोगिक रसायन का हिंदी में प्रकाशन। पाक्षिक –पत्र 'विश्व विलोक' में विज्ञान–स्तंभ लेखन। मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी से अकार्बनिक रसायन की स्नातक/स्नातकोत्तर कक्षाओं की पाठ्य पुस्तकों समेत 15 से अधिक पुस्तकों और 'ज्ञानोदय' पत्रिका में विज्ञान संबंधी कविताओं का प्रकाशन। प्रादेशिक और राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं द्वारा अनेक सम्मानों से सम्मानित। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा डॉ. पुरूषोत्तम भट्ट चक्रवर्ती को हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन, पाठ्य पुस्तकों के निर्माण, पचास वर्षों से निरंतर सृजन सक्रियता, गहरी प्रतिष्ठा और उल्लेखनीय योगदान के लिए वर्ष 2015–16 में हिंदी भाषा– गुणाकर मुले सम्मान से विभूषित किया है।

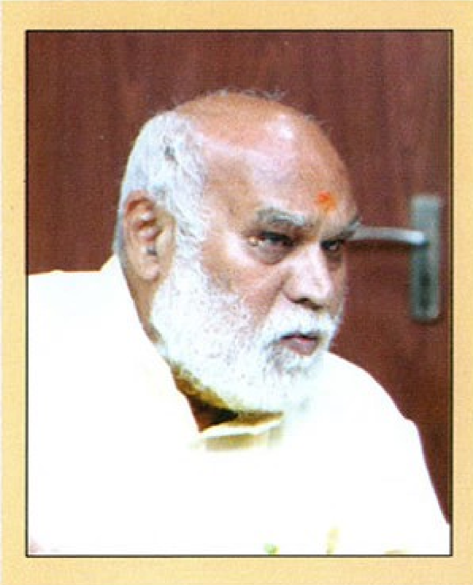

डॉ. हरिमोहन बुधौलिया

जन्म 2 जनवरी, 1945। शिक्षा : एम. ए., पीएच.डी. (हिन्दी) 1973 में विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन। राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी 17–18 दिसम्बर, 2008 यू.जी.सी. द्वारा आयोजित शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय द्वारा सुजानगढ़ (राज.) सारस्वत अतिथि सम्मान। अखिल भारतीय साहित्य परिषद् द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में उद्बोधन 14–15 जून, 2014 बांसवाड़ा, राजस्थान। शोध निर्देशन : 80 शोध छात्रों को पीएच.डी. उपाधि के मान्य शोध निर्देशक, एम. फिल. उपाधि के लिए 51, एम. ए. उपाधि के लिए 29 छात्रों का लघु शोध प्रबंध निर्देशन। देश एवं विदेश में आयोजित 30 शोध संगोष्ठियों में शोधपत्र वाचन एवं प्रमुख वक्ता। सम्पादन पत्रिकाएँ : अरूणोदय पत्रिका दी विक्रम रिसर्च जनरल 'मध्य विचार साहित्य सम्पादन।

डॉ. कृष्णकांत चतुर्वेदी

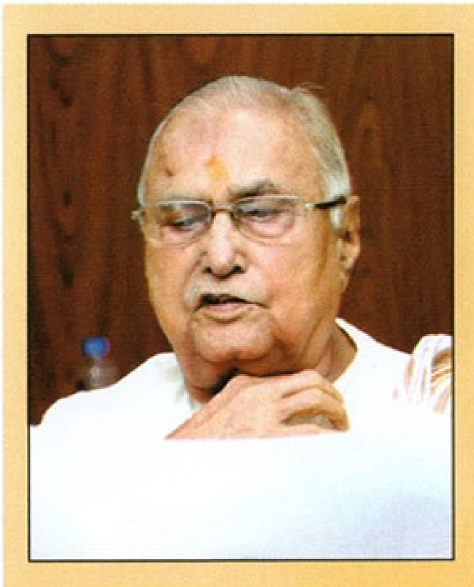

आचार्य डॉ. कृष्णकांत चतुर्वेदी का जन्म 19 दिसम्बर, 1937 जबलपुर (म.प्र.)। प्रारंभिक शिक्षा जबलपुर, एम.ए. (संस्कृत), एम.ए. (पालि–प्राकृत) साहित्याचार्य, पीएच.डी.। द्वैत वेदान्त तत्व समीक्षा, अधातो ब्रह्म जिज्ञासा, राधा भाव सूत्र, आगत का स्वागत एवं अनुवाक आदि प्रकाशित कृतियाँ। विवेक मकरंदम्, पिबत भागवतम्, जयतीर्थ स्तुतिः का अनुवाद। ब्रजगंधा (ब्रज भाषा में) काव्य। डॉ. प्रभुदयाल अग्निहोत्री स्मृति ग्रंथ, श्री रामचन्द्र दास शास्त्री स्मृति ग्रंथ, स्वामी सत्यमित्रानंद गिरी अभिनंदन ग्रंथ का सम्पादन। आपके निर्देशन में 40 छात्र पीएच.डी., तीन छात्र डी. लिट् की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं एवं लगभग 20 शोध–निबंध प्रकाशित किये हैं। डॉ चतुर्वेदी को मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संस्कृत विद्वान के रूप में राष्ट्रपति सम्मान पत्र से अलंकृत, डी. लिट् की मानद उपाधि, केन्द्रीय लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली एवं देश के प्रायः सभी क्षेत्रों के विशिष्ट राष्ट्रीय संगठनों द्वारा सम्मानित किया गया है। आचार्य स्तर की शोध संगोष्ठियां, सम्मेलनों की अध्यक्षता और मुख्य आतिथ्य। आचार्य कृष्णकांत चतुर्वेदी भारतीय चिंतन परम्परा के उज्जवल नक्षत्र हैं।

हिन्दी भाषा
हिन्दी सेवा सम्मान
2017–18

डॉ. छबिल कुमार मेहेर

डॉ. छबिल कुमार मेहेर

डॉ. छबिल कुमार मेहेर का जन्म 18 जून 1973 को उड़ीसा, जिला–बरगढ़ के लाउमुण्डा गाँव के एक संयुक्त मध्यवर्गीय परिवार में हुआ। शिक्षा–उड़िआ भाषा के कवि–रचनाकार पिता से प्राप्त संस्कार, बचपन का स्कूल बना। बी.ए. तक की पढ़ाई बंजारेपन और पेंटिंग की रुचियों के साथ–साथ हुई। हिन्दी साहित्य में एम.ए., अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, तुलनात्मक भाषा विज्ञान में एम.फिल. नेट, पीएच.डी. उपाधियाँ।

डॉ. मेहेर पिछले डेढ़ दशक से अनुवाद–आलोचना –सम्पादन में सक्रिय। विभिन्न महत्त्वपूर्ण संस्थाओं में अपनी सक्रिय सेवा, इन दिनों डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में हिन्दी अधिकारी के रूप में कार्यरत ।

अब तक 8 आलोचना और 23 सम्पादित पुस्तकें प्रकाशित एवं कई चर्चित उड़िआ कहानियों का हिन्दी में अनुवाद। इसके अलावा नया ज्ञानोदय, वागर्थ, साक्षात्कार, सापेक्ष, अक्षर पर्व, वर्तमान साहित्य, चिन्तन दिशा, समकालीन भारतीय साहित्य, हिन्दुस्तानी चिन्तन–सृजन, दस्तावेज आदि पत्रिकाओं में आलेख प्रकाशित। विश्वविद्यालय की ओर से मॉरीशस में आयोजित 11वें विश्व हिन्दी सम्मलेन में सहभागिता।

वर्तमान में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय से प्रकाशित राजभाषा उन्नयन की वार्षिक पत्रिका 'भाषा भारती' के सम्पादक तथा मानविकी एवं समाज विज्ञान की द्विभाषी शोध–पत्रिका 'मध्य भारती' के प्रबन्ध सम्पादक हैं।

हिन्दी भाषा
हिन्दी सेवा सम्मान
2017–18

चयन समिति की बैठक

हिंदी भाषा
हिंदी सेवा सम्मान
2017–18
चयन समिति का प्रतिवेदन

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा हिंदी भाषा–हिंदी सेवा सम्मान 2017–18 प्रदान करने के संबंध में चयन समिति की बैठक 31 अगस्त, 2018 को भोपाल में सम्पन्न हुई, जिसमें निम्नानुसार सदस्य सम्मिलित हुए :–

1. **प्रो. रमेश चन्द्र पण्डा, उज्जैन**
2. **श्री अनूप अशेष, सतना**
3. **प्रो. संजीव कुमार दुबे, गुजरात**
4. **प्रो. के. बी. पण्डा, भोपाल**

चयन समिति को अवगत कराया गया कि मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित हिंदी सेवा सम्मान "उन अहिंदी भाषी लेखकों और साहित्यकारों को जिन्होंने अपने लेखन तथा सृजन से हिंदी को समृद्ध किया हो, उन्हें हिंदी सेवा सम्मान प्रदान किया जायेगा।"

यह सम्मान रचनात्मक अवदान के लिए देय है। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग, ने इस सम्मान के लिए देशभर के अहिंदी भाषी साहित्यकारों, विशेषज्ञो, आलोचकों से सीधे तथा समाचार पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित कर आवेदन पत्र/अनुशंसाएँ आमंत्रित की गई हैं। सम्मान हेतु प्राप्त सभी आवेदन पत्र/अनुशंसाओं को चयन समिति के समक्ष रखा गया। चयन समिति ने प्राप्त अनुशंसाओं/आवेदन पत्रों की समीक्षा की।

डॉ. छबिल कुमार मेहेर ने अहिंदी उड़िया भाषी होते हुए भी हिंदी भाषा के क्षेत्र में गहरी प्रतिष्ठा, निरंतर सजृन सक्रियता के माध्यम से हिंदी को समृद्ध करने, हिंदी के रचनात्मक लेखन, शोध एवं प्रचार–प्रसार में अपूर्व योगदान दिया है।

चयन समिति की बैठक में सदस्यों ने प्राप्त अनुशंसाओं का अवलोकन एवं विचार विमर्श करने के पश्चात् चयन समिति द्वारा सर्वसम्मति से प्रख्यात डॉ. छबिल कुमार मेहेर का नाम हिंदी भाषा–हिंदी सेवा सम्मान प्रदान करने की अनुशंसा करती है।

(प्रो. रमेश चन्द्र पण्डा)	(अनूप अशेष)	(प्रो. संजीव कुमार दुबे)	(के. बी. पण्डा)

प्रो. रमेश चन्द्र पण्डा

प्रो. रमेश चन्द्र पण्डा का जन्म 02 सितम्बर, 1954 को ग्राम– अचूली, पोस्ट– पुरूषोत्तम, जिला गंजम ओडिसा में हुआ। शिक्षा एम.ए., पीएच.डी.। 33 वर्षों का अध्यापन, 31 वर्षों का प्रशासनिक एवं 27 वर्षों का शोध निर्देशन अनुभव। पतंजलि के महाभाष्य पर लघुशोध एवं व्याकरण दर्शन कोष पर शोध प्रबंध। पुस्तकें पस्पासहनिका का महाभाष्य ''शब्दार्थसरामंजरी'' और ''शब्दार्थ तरंग'' प्रकाशित। बेस्ट पेपर अवार्ड, संस्कृत इयर अवार्ड, वैदिक विद्वत सम्मान, सम्मान पत्रम्, ज्योतिषमार्तण्ड, भारतीय भाषा सम्मान से सम्मानित। प्रो. रमेश चन्द्र पण्डा वर्तमान में महर्षि पाणिनी संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन में कुलपति के पद पर कार्यरत् हैं।

अनूप अशेष

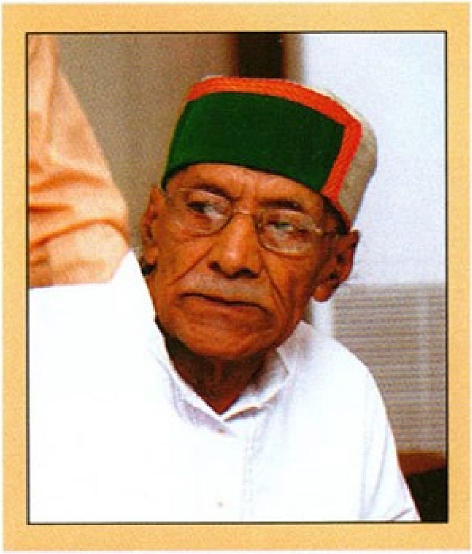

हिंदी के वरिष्ठ कवि अनूप अशेष का जन्म 7 अप्रैल, 1945 को सोनौरा, सतना (मध्यप्रदेश) में हुआ। हिंदी साहित्य में एम.ए.। ''धर्मयुग'' पत्रिका (1970–71) से पूरे देश में कवि के रूप में प्रतिष्ठित। हिंदी के साथ स्थानीय बोली 'बघेली' में समांतर लेखन, बघेली में नवगीत विधा के जनक। हिंदी कविता में नवगीत विधा के प्रख्यात कवि। नवगीत कविता संग्रह – लौट आयेंगे सगुन पंछी, वह मेरे गाँव की हंसी थी, हम अपनी खबरों के भीतर, सफर नंगे पाँव का, आदिम देहों के अरण्य में घर, इस बसंत मोड़ों पर, दिन ज्यों पहाड़ के, सपने मरने के लिए आते हैं नींद में, बघेली नवगीत संग्रह– बांधव– राग, दुपहर, महॉकन्तार मा उपनहें आदि आपकी प्रकाशित कृति हैं।

साहित्य अकादमी (मध्यप्रदेश) का अखिल भारतीय भवानी प्रसाद मिश्र पुरस्कार एवं ईसुरी पुरस्कार के अलावा निराला सम्मान, अखिल भारतीय ''डॉ. शम्भूनाथ सिंह नवगीत पुरस्कार'' एवं विन्ध्य शिखर सम्मान से सम्मानित।

प्रो. संजीव कुमार दुबे

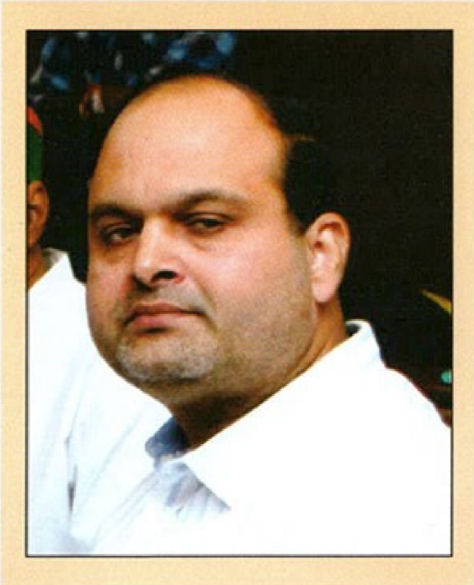

प्रो. संजीव कुमार दुबे मुम्बई विश्वविद्यालय से एम.ए. एवं हिंदी कहानी और साम्प्रदायिकता विषय पर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त हैं। एम. फिल. एवं पीएच.डी. उपाधि हेतु शोध कार्यों के निर्देशन, दैनिक अखबारों में वरिष्ठ उपसंपादक, अखबारों में साप्ताहिक स्तंभ लेखन सहित पत्रकारिता की प्रचुर लेखन, अनुवाद एवं संपादन। हिन्दी कहानी और साम्प्रदायिकता, श्री कृष्ण आयोग का सच' शीर्षक से मराठी से हिन्दी में अनुदित, पुस्तक अक्षर का प्रकाशन। त्रैमासिक शोध पत्रिका सृजन संदर्भ का संपादन, दस अंतर्राष्ट्रीय, सत्तर से अधिक राष्ट्रीय परिसंवादों में शोध प्रस्तुति। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय परिसंवादों का सफलतापूर्वक संयोजन। डॉ. दुबे वर्तमान में प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिन्दी भाषा एवं साहित्य अध्ययन केंद्र गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय में कार्यरत् हैं।

प्रो. के. बी. पण्डा

प्रो. के. बी. पण्डा का जन्म आनन्दपुर, ओडिसा में हुआ। आपने एम.ए. (संस्कृत) एवं पीएच.डी. की उपाधि सागर विश्वविद्यालय से प्राप्त की है। काव्यशास्त्र, नाटयशास्त्र, तुलनात्मक साहित्य, शैली विज्ञान एवं समाज भाषा विज्ञान के अध्येता। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता। संस्कृत, भाषा विज्ञान एवं भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित अनेक शोध पत्र/लेख प्रकाशित। वागर्थ सम्मान एवं हिन्दीतर भाषी हिन्दी सेवा सम्मान से सम्मानित। सम्प्रति बरकतउल्ला विश्वविद्यालय में तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग के अध्यक्ष। अधिष्ठाता कला संकाय।

संस्कृति सम्मान

राष्ट्रीय सम्मान

महात्मा गाँधी सम्मान	गाँधी विचार दर्शन (संस्था हेतु)	10.00 लाख
कबीर सम्मान	भारतीय भाषाओं की कविता के लिए	3.00 लाख
कालिदास सम्मान	शास्त्रीय संगीत	2.00 लाख
कालिदास सम्मान	शास्त्रीय नृत्य	2.00 लाख
कालिदास सम्मान	रंगकर्म	2.00 लाख
कालिदास सम्मान	रूपंकर कलाएँ	2.00 लाख
मैथिलीशरण गुप्त सम्मान	हिन्दी साहित्य	2.00 लाख
किशोर कुमार सम्मान (फिल्म)	अभिनय	2.00 लाख
तानसेन सम्मान	हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत	2.00 लाख
लता मंगेशकर सम्मान (फिल्म)	संगीत निर्देशन	2.00 लाख
इक़बाल सम्मान	उर्दू साहित्य	2.00 लाख
देवी अहिल्या सम्मान (महिला)	लोक एवं आदिवासी पारंपरिक कलाओं के लिए	2.00 लाख
तुलसी सम्मान (पुरूष)	लोक एवं आदिवासी पारंपरिक कलाओं के क्षेत्र में प्रदर्शनकारी कलाओं के लिए	2.00 लाख
शरद जोशी सम्मान	हिन्दी व्यंग्य, ललित निबंध, संस्मरण रिपोर्ताज, डायरी, पत्र लेखन आदि	2.00 लाख
नानाजी देशमुख सम्मान	सामाजिक, सांस्कृतिक समरता, उत्थान, परिष्कार आध्यात्म, परम्परा, समाज एवं विकास तथा संस्कृति की मूल अवधारणा के प्रति कार्य करने वाले व्यक्ति अथवा संस्था	2.00 लाख
कवि प्रदीप सम्मान	मंचीय कविता के क्षेत्र में	2.00 लाख
कुमार गंधर्व सम्मान	शास्त्रीय नृत्य (आयु समूह 24 से 45 वर्ष)	1.25 लाख
राजा मानसिंह तोमर सम्मान	संगीत, संस्कृति एवं कला संरक्षण में कार्य करने वाली संस्था के लिए	1.00 लाख
सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान	हिन्दी सॉटवेयर सर्च इंजिन, बेव डिजाइनिंग, डिजीटल भाषा प्रयोगशाला प्रोग्रामिंग, सोशल मीडिया, डिजीटल ऑडियो विजुअल एडीटिंग आदि में उत्कृष्ट योगदान।	1.00 लाख
निर्मल वर्मा सम्मान	भारतीय अप्रवासी होकर विदेश में हिन्दी के विकास में अमूल्य योगदान	1.00 लाख
फादर कामिल बुल्के सम्मान	विदेशी मूल के व्यक्ति के हिन्दी भाषा एवं उसकी बोलियों के विकास में उत्कृष्ट योगदान	1.00 लाख
गुणाकर मुले सम्मान	हिन्दी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन एवं पाठ्य–पुस्तकों के लिए लेखन।	1.00 लाख
हिन्दी सेवा सम्मान	अहिन्दी भाषी लेखकों और साहित्यकारों की लेखन–सृजन से हिन्दी की समृद्धि के लिए योगदान।	1.00 लाख

राज्य सम्मान

शिखर सम्मान	हिन्दी साहित्य	1.00 लाख
शिखर सम्मान	उर्दू साहित्य	1.00 लाख
शिखर सम्मान	संस्कृत साहित्य	1.00 लाख
शिखर सम्मान	रूपंकर कलाएँ	1.00 लाख
शिखर सम्मान	नृत्य	1.00 लाख
शिखर सम्मान	नाटक	1.00 लाख
शिखर सम्मान	संगीत	1.00 लाख
शिखर सम्मान	आदिवासी एवं लोक कलाएँ	1.00 लाख
शिखर सम्मान	दुर्लभ वाद्य वादन	1.00 लाख

मध्यप्रदेश शासन

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के लिए
संस्कृति संचालनालय द्वारा आयोजित

मध्यप्रदेश माध्यम/2018
तक्षिका प्रिंटर्स, भोपाल